Cf – यीशु आत्मा की शक्ति में गलील लौट आए, उनके बारे में समाचार पूरे देश में फैल गया मरकुस १ का १४ से १५ और लूका ४ का १४ से १५ | 1

– Save This Page as a PDF–

यीशु आत्मा की शक्ति में गलील लौट आए,

उनके बारे में समाचार पूरे देश में फैल गया

मरकुस १:१४-१५ और लूका ४:१४-१५

खोदाई: लूका ३:२१, ४:१, १४ और १8 की तुलना करें। इनमें से प्रत्येक पद में सामान्य तत्व क्या है? यह हमें यीशु की शक्ति के स्रोत के बारे में क्या बताता है? क्या पश्चाताप मोक्ष के समान है? क्यों या क्यों नहीं?

चिंतन करें: यदि प्रेरित दिखाते हैं कि पश्चाताप करने (हिब्रू: मुड़ना या लौटना) और विश्वास करने का क्या मतलब है, तो आप कहां हैं: (क) अभी भी मछली पकड़ रहे हैं? (ख) पुराने व्यवसाय को जारी रखना और येशुआ के साथ रातें और सप्ताहांत बिताना? (ग) तट पर तैरना? व्याख्या करना।

योचनान बप्तिस्मा देनेबाला राजा का अग्रदूत था क्योंकि उसने “परमेश्वर की ओर वापसी आंदोलन” की शुरुआत की थी। यह मूल रूप से पश्चाताप का संदेश था, और मसीहा के संपूर्ण सांसारिक मंत्रालय का केंद्रीय संदेश था। पश्चाताप शब्द उनका एक शब्द का उपदेश था। मनमौजी रब्बी कठोर गर्दन वाली भीड़ के सामने साहसपूर्वक खड़ा होगा और घोषणा करेगा: जब तक आप पश्चाताप नहीं करेंगे, आप सभी नष्ट हो जाएंगे (लूका १३:५)। यीशु के अनुसार शुभ समाचार उतना ही पश्चाताप करने या पाप से फिरने का आह्वान है, जितना विश्वास करने का निमंत्रण है। पश्चाताप शब्द का अनुवाद हिब्रू शब्द शूब से किया गया है, जो यिर्मयाह की पुस्तक में मुख्य शब्द है (यिर्मयाह Ac पर मेरी टिप्पणी देखें – यिर्मयाह की पुस्तक का परिचय)।



यूहन्ना को जेल में डाल दिए जाने के बाद, यीशु
आत्मा की शक्ति में गलील में लौट आए, और परमेश्वर का सुसमाचार सुनाया। उन्होंने

Cf – यीशु आत्मा की शक्ति में गलील लौट आए, उनके बारे में
समाचार पूरे देश में फैल गया मरकुस १ का १४ से १५ और लूका ४ का
१४ से १५ | 2

कहा, ”समय आ गया है.” “परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है।” इसलिए उसके बारे में खबरें हर जगह, पूरे ग्रामीण इलाकों में फैल गईं (मरकुस १:१४; ल्यूक ४:१४) यह मसीहा साम्राज्य की आधिकारिक पेशकश थी यदि इज़राइल राष्ट्र और उसका नेतृत्व, या सैन्हेड्रिन, उसे स्वीकार करेंगे।

वह उनके आराधनालयों में सिखा रहा था: पश्चाताप करो और सुसमाचार पर विश्वास करो (मरकुस १:१५; लूका ४:१५)। पश्चाताप क्या है? यह विश्वास को बचाने का महत्वपूर्ण तत्व है, लेकिन किसी को इसे केवल विश्वास का दूसरा शब्द मानकर खारिज नहीं करना चाहिए। एक ओर, सच्चा पश्चाताप हमेशा विश्वास के साथ मौजूद होता है; दूसरी ओर, जब भी सच्चा विश्वास होता है, तो सच्चा पश्चाताप भी होता है। . . दोनों को अलग नहीं किया जा सकता. ऐसा पश्चाताप रब्बी शाऊल के मन में था जब उसने थिस्सलुनिकियों के कार्यों का वर्णन किया। . . तुम मूर्तियों से परमेश्वर की ओर फिरे, कि सच्चे परमेश्वर की सेवा करो, जो जीवित है (प्रथम थिस्सलुनीकियों १:९ सीजेबी)। पश्चाताप के तीन तत्वों पर ध्यान दें: ईश्वर की ओर मुड़ना, पाप से दूर होना और ईश्वर की सेवा करने का इरादा। सरल सत्य यह है कि बदली हुई सोच के परिणामस्वरूप व्यवहार में बदलाव आएगा।

पश्चाताप का अर्थ केवल पाप करने पर शर्मिंदा होना या खेद महसूस करना नहीं है, हालाँकि वास्तविक पश्चाताप में हमेशा पश्चाताप का तत्व शामिल होता है। अधर्म से मुँह मोड़कर उसके स्थान पर धर्म का अनुसरण करना एक उद्देश्यपूर्ण निर्णय है। न ही पश्चाताप केवल एक मानवीय कार्य है। क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है – और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है – कर्मों के द्वारा नहीं, ऐसा कोई घमण्ड नहीं कर सकता (इफिसियों २:8-९)। यह केवल एक मानसिक गतिविधि नहीं है, बल्कि इसमें बुद्धि, इच्छाशक्ति और भावनाएं शामिल हैं।

भावनाएँ पश्चाताप का हिस्सा हैं, लेकिन वे रास्ता नहीं दिखाती हैं। कई लोग सोचते हैं कि बचाए जाने से पहले उन्हें कुछ महसूस करना होगा। लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि हमारी भावनाएँ इंजन नहीं, बल्कि कैबोज़ हैं। भावनाएँ आएंगी, लेकिन वे रास्ता नहीं दिखाएंगी और उन्हें नेतृत्व नहीं करना चाहिए। आपने अपने जीवन में जो किया है उसके बारे में पछतावा करना अपने आप में सच्चा पश्चाताप नहीं है। उदाहरण के लिए, यहूदा को पछतावा महसूस हुआ (मत्ती २७:३), लेकिन उसे पश्चाताप नहीं हुआ। अमीर युवा शासक दुखी होकर चला गया (मत्ती १९:२२), लेकिन उसे पश्चाताप नहीं हुआ। पश्चाताप मुक्ति नहीं है. . . यह मोक्ष की ओर ले जाता है. दूसरा कुरिन्थियों ७:१0 कहता है: ईश्वरीय दुःख पश्चाताप लाता है जो मोक्ष की ओर ले जाता है और कोई पछतावा नहीं छोड़ता, लेकिन सांसारिक दुःख मृत्यु लाता है। कम से कम दुःख के तत्व के बिना वास्तव में पश्चाताप करने की कल्पना करना कठिन है – पकड़े जाने के लिए नहीं, उन परिणामों के कारण दुःख नहीं जिनका सामना करना पड़ेगा, बल्कि ईश्वर के विरुद्ध पाप करने के लिए दुःख की भावना। पश्चात्ताप आपके मूल स्वरूप को बदल देता है।

Cf – यीशु आत्मा की शक्ति में गलील लौट आए, उनके बारे में
समाचार पूरे देश में फैल गया मरकुस १ का १४ से १५ और लूका ४ का
१४ से १५ | 3

पश्चाताप एक बार का कार्य नहीं है। यह रूपांतरण से शुरू होता है (Bw देखें – विश्वास के क्षण में परमेश्वर हमारे लिए क्या करता है), और मसीह की छवि के अनुरूप होने की एक प्रगतिशील, जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया शुरू करता है (रोमियों ८:२९)। पश्चाताप का यह निरंतर रवैया आत्मा की गरीबी, शोक और नम्रता पैदा करता है, जिसके बारे में येशुआ ने पर्वत पर उपदेश में कहा था (देखें Da – पर्वत पर उपदेश)। यह एक सच्चे आस्तिक की पहचान है |

उन लोगों के बारे में क्या जो कहते हैं कि वे आस्तिक हैं, फिर भी वास्तव में भेड़ के भेष में भेड़िये हैं (जुदास Ah पर मेरी टिप्पणी देखें – ईश्वरविहीन लोग गुप्त रूप से आपके बीच में घुस आए हैं)? क्या उन्होंने अपना उद्धार खो दिया? नहीं, परमेश्वर न करे (देखें Ms – बिसवासी का अनन्त सुरक्षा)। युहोन्ना ने इसे इस तरह कहा: वे हमारे बीच से चले गए, लेकिन वे वास्तव में हमारे नहीं थे। क्योंकि यदि वे हमारे होते, तो हमारे ही साथ बने रहते; परन्तु उनके जाने से पता चला कि उनमें से कोई भी पहले हमारा नहीं था (प्रथम यूहन्ना २:१९)। वे वास्तव में शुरुआत से ही कभी विश्वास करने वाले नहीं थे |

तो हम कैसे बता सकते हैं कि कौन आस्तिक है और कौन नहीं? यदि पश्चाताप वास्तविक है, तो हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि इससे प्रत्यक्ष परिणाम प्राप्त होंगे। हमें दूसरों का मूल्यांकन नहीं करना चाहिए, लेकिन हमें फल निरीक्षक होना चाहिए (जुदास As पर मेरी टिप्पणी देखें – वे फल के बिना पतझड़ के पेड़ हैं, समुद्र की जंगली लहरें उनकी शर्मिंदगी को बढ़ा रही हैं, भटकते सितारे हैं)। यीशु ने इसे इस प्रकार कहा: झूठे विश्वासियों से सावधान रहें। वे भेड़ के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु भीतर से वे खूँखार भेड़िये हैं। उनके फल के द्वारा आप उन्हें पहचान लेंगे। क्या लोग कंटीली झाड़ियों से अंगूर तोड़ते हैं, या ऊँटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं? जैसे हर अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है, परन्तु बुरा पेड़ बुरा फल लाता है। एक अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और एक बुरा पेड़ अच्छा फल नहीं ला सकता। हर वह पेड़ जो अच्छा फल नहीं लाता, काटा और आग में झोंक दिया जाता है। इस प्रकार, उनके फल से तुम उन्हें पहचानोगे (मत्ती ७:१५-२०)। प्रभु के दिन में ऐसे लोग थे, और आज ऐसे लोग हैं जो पाप, अविश्वास और अवज्ञा से मुंह मोड़ लेते हैं, और आज्ञाकारी विश्वास के साथ मसीहा को गले लगाते हैं। उनका सच्चा पश्चाताप है, जो उससे पैदा होने वाली धार्मिकता से प्रदर्शित होता है। वे सचमुच धर्मात्मा हैं। और यह मसीह का अंतिम उद्देश्य था जब वह आत्मा की शक्ति में गलील में लौटा, और परमेश्वर के शुभ समाचार की घोषणा की।